रामराज्य के लिए दृढ़ संकल्पित थे-प्रजापिता ब्रह्मा

यह शब्द याद आते ही देश को अहिंसा के पथ का पथिक बनाने वाले बापू महात्मा गांधी के कर्मो की झलक परछाई के समान सामने आ जाती है। बापू ने देश में रामराज्य की परिकल्पना लेकर देश को स्वतंत्र कराया लेकिन उनका रामराज्य का सपना अधूरा रह गया। उन्हीं सपनों को लेकर दिव्य अलौकिक शक्ति से विभूषित एक ऐसे महापुरूष हुए जिनके मार्गदर्शन पर चलते हुए आज लाखों लोग रामराज्य के लिए मन्सा, वाचा, कर्मणा से प्रयत्नशील है। ब्रह्माकुमारी संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने महिलाओं को ऐसे समय में ऊंचा स्थान दिया जब महिलाओं के अधिकारों के बारें में चर्चा तक नहीं होती थी। उन्होंने समाज को यह बतला दिया कि बिना नारी उत्थान के विश्व का उत्थान सम्भव नहीं है। ऐसे समय में इन विभूतियों का जन्म तब होता है,प्रकृति तथा पुरूष की आन्तरिक वेदना ईश्वरीय शक्ति की ओर उन्मुख होकर आह्वान करने लगती है तब इस सृष्टि में मानवीय मूल्यों को पुर्नस्थापित करने तथा मानवीयता को सहारा देने की अति आवश्यकता होती है। जो इस जलती अंगार पर शीतलता का जल प्रदान कर एक नये जीवन जीने की प्रबल प्रेरणा प्रदान करता है।

हैदराबाद सिन्ध (जो अभी पाकिस्तान मे है) में ऐसा ही कुछ घटित हुआ सन् 1876 में। इस निर्दयी दुनियां में कुलीन परिवार में जन्म लेकर एक दिव्य आत्मा ने दैवी गुणों से सजकर हीरों के व्यापारी के साथ-साथ दैवी गुणों के विश्व विख्यात व्यापारी बने। बचपन के नाम से पहचाने जाने वाले दादा लेखराज को बचपन से ही सर्व मुनष्यात्माओं की कराह स्वयं की कराह महसूस होने लगी थी। वे मन ही मन ईश्वर से प्रर्थनीय रहते कि सर्व दुखी मनुष्यात्माओं का कल्याण हो। लौकिक पिता व्यवसाय से अध्यापक होने के कारण उन्हें अर्थव्यवस्था की कोई कमी नहीं थी, परन्तु समय के भावी के अनुसार वाल्यकाल में ही उनके पिता का देहान्त हो गया। अब उन्हें अर्थव्यवस्था की आवश्यकता महसूस होने लगी थी। उन्होंने छोटा सा हीरे का व्यवसाय शुरु किया और देखते ही देखते वे अपनी कार्यकुशलता और ईमानदारी से लखपति विश्व विख्यात जौहरी बन गये। उनके सम्बन्ध बड़े राज-घराने से हो गये। साठ साल की उम्र में उनमें एक क्रान्तिकारी परिवर्तन आया और उन्होंने भौतिक ऐश्वर्यों का त्याग कर दिया। नयी दुनियां की स्थापना के लिए ट्रांस, साक्षात्कार का दिव्य उनके जीवन में संगम हुआ। और वे पवित्रता, मधुरता और दिव्यता को अपनाकर आध्यात्मिक क्रान्ति की नींव रखी। बाबा का महामानवीय व्यक्तित्व इतना अदभुत था कि जो कोई भी उनके सामने आता उनका हो जाता था। अदम्य साहस, निष्ठा और प्रेम की अटूट पराकाष्ठा के बल पर वे ईश्वरीय शक्ति के सानिध्य की मदद लेते हुए सर्व मनुष्यात्माओं को उनके सुख और शान्ति के लिए पूर्ण प्रयत्नशील थे।

दादा लेखराज जिन्हें स्वयं परमात्मा शिव ने आध्यात्मिक नाम प्रजापिता ब्रह्मा दिया, ने मानव सृष्टि के इतिहास में त्याग की अद्वितीय मिसाल प्रस्तुत किया। प्रजापिता ब्रह्मा ने सम्भवत: विश्व में सर्वप्रथम नारी-सत्ता द्वारा सम्पूर्ण रूप से संचालित इस आध्यात्मिक संस्था की स्थापना किया। इस प्रकार मानव सृष्टि के भविष्य दृष्टा प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने नारियों का आज से लगभग 70 वर्ष पूर्व आध्यात्मिक रूप से सशक्तिकरण करके उनके अधिकारों का मार्ग प्रशस्त कर दिया जब समाज में महिलाओं के अधिकारों की चर्चा तक भी नहीं होती थी। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने संयमित जीवन में आने वाली बाधाओं कलयुगी फैशन और फुसलाने वाले वैभवों से माताओं-बहनों को दूर रहने की प्रेरणा दी। माताओं-बहनों के कोमल स्वभावों को जान उनका उचित मार्गदर्शन किया। परमपिता परमात्मा शिव बाबा की प्रेरणानुसार ब्रह्मा बाबा ने जगत माता और बन्देमातरम् की परिकल्पना को जीवंत करते हुए अपनी सारी सम्पत्ति तथा छोटी सी संस्था ओम् मंडली की सत्ता माताओं बहनों के हाथों में सौंप दी।

उन्होंने छोटे सा समूह लेकर आध्यात्मिक और ईश्वरीय शक्ति से आसुरी प्रवृत्तियों के खिलाफ जंग का ऐलान किया और दैवी शक्ति से आसुरी शक्ति पर विजय प्राप्त करने के लिए आन्तरिक लड़ाईयां भी लड़ी। अन्तत: वे कुशलता पूर्वक सफल हुए। हंस समान मीठी धवल वस्त्रधारिणी बहनों ने त्याग की मिशाल सबके सामने रख अपने जीवन को ईश्वरीय ज्ञान और योग से अपने जीवन को पवित्र बनाकर दूसरों की प्रेरणादायी सिद्ध हुई। बाबा ने सर्वधर्मों के लोगों का आदर किया और सब धर्मों के सार को लेते हुए गर्त में गिर रहे तथा देअभिमानवश बुराईयों के कुचक्र में फंसे लोगों को उनसे निकलने तथा अपने जीवन को दिव्य बनाने के लिए प्रेरित किया। आत्मा के निजी गुणों से लोगों को अवगत कराया और अच्छे व बुरे की उचित पहिचान दी।

बाबा यह अच्छी तरह से समझ गये थे कि आसुरीयता को समाप्त करने तथा समाज को सुखी बनाने के लिए आन्तरिक सशक्तिकरण का होना अति आवश्यक है। उन्होंने लोगों के आन्तरिक स्थिति से मजबूत होकर एक श्रेष्ठ जीवन जीने की सलाह दी। लोग धीरे-धीरे यह समझने लगे थे कि बाबा जो भी कह रहे है वह हमारे तथा पूरे समाज के लिए अतिउत्तम पथ है। सानिध्य में आने वाले बुरी से बुरी आदतों वाले लोगों को भी बाबा उनके अन्दर ऐसी अपार शक्ति का एहसास दिलाते जैसे उनके लिए लंगड़े को पहाड़ पर चढ़ने की कहावत सिद्ध होने लगती थी। आत्मा और शरीर का पूर्ण परिचय देने पर हर कोई इस राह को बड़ी सहजता से स्वीकार कर लेता था। बाबा अलौकिक गुणों व बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे कि उनका विरोध करने वाले भी जब उनके सामने आते तो उनकी रूहानी मीठी दृष्टि, मीठी वाणी उनके ह्दय को स्पर्श किये बिना नहीं रहती। वे मन ही मन अपनी गलतियों का एहसास कर परिवर्तन करने का दृढ़ निश्चय कर लेता। ऐसे महापुरूष, जिन्होंने आध्यात्मिक नीति एवं वैज्ञानिक विधि को आपनाया, को महान क्रान्तिकारी भी कह सकते हैं। वे लम्बी आयु वाले थे, सारे वैभवों का त्याग कर छोटी सी शुरूआत से विश्व भर में उन्होंने अपना प्रभुत्व स्थापन किया। अपने उन्नत विश्वास से, शान्ति की शक्ति से एवं अपनी साकार उपस्थिति से सभी की पालना की तथा घृणा को, विपत्तियों को एवं हिंसक लहरों को पराजित किया।

बाबा इस मुक्ति और जीवनमुक्ति के सरल पथ पर चलते हुए अपने स्थिति को फरिश्ता रूप में बदल लिया और 18 जनवरी, 1969 को उनका नश्वर शरीर पांच तत्वों में विलीन हो गया। वे आज साकार में नहीं है परन्तु उनके आध्यात्मिक प्रभाव से यह 5 महाद्वीपों में तेजी से फैलता जा रहा है। वे योग रूप में लाखों लोगों के दिलों में मौजूद है। सूक्ष्म रूप में वे जगत पिता के रूप में आज भी पालना कर रहे है। मानवता में आशाहीनता, दरिद्रता एवं असभ्यता को परिवर्तन करने वाली यह एक विश्व न्याय प्रभुत्व की दिव्य मिशनरी है। बाबा की जिधर भी एक दृष्टि पड़ती उधर लाखों लोगों की दृष्टि उठ रही है। आज उनके पदचिन्हों पर लाखो लोग चल रहे है। महात्मा गांधी राम राज्य का सपना पूरा तो नहीं कर पाये पर जगत बापू के रूप में ब्रह्मा बाबा का आज से 70 साल पहले का छोटा सा प्रयास इसको अवश्य पूरा करता प्रतीत हो रहा है। दिव्य शक्ति परमपिता परमपिता परमात्मा शिव का यह निर्देश है कि यह सृष्टि एक परिवर्तन बेला है। हम शरीर नहीं एक अविनाशी आत्मा है। संसार में जो भी तेजी से मूल्यों का पतन अथवा मानवता विघटित हो रही है उसके हम स्वयं जिम्मेदार है। अब पुन: सृष्टि परिवर्तन वक्त सामने खड़ा है आने वाली दुनियां नयी और उज्वल भारत होगा। इसलिए आईये ब्रह्मा बाबा के प्रेरणाओं पर चलकर अपने जीवन को दिव्य बनायें तथा सतयुगी दुनियां के स्थापना में सहयोगी बने।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com